कथा सरिता

उठाओ ही नहीं

एक संत से एक युवक ने पूछा: 'गुरुदेव, हमेशा खुश रहने का नुस्खा अगर हो तो दीजिए।'

संत बोले: 'बिल्कुल है, आज तुमको वह राज़ बताता हूँ।' संत उस युवक को अपने साथ सैर को ले चले, अच्छी बातें करते रहे, युवक बड़ा आनंदित था।

एक स्थान पर ठहर कर संत ने उस युवक को एक बड़ा पत्थर देकर कहा: 'इसे उठाए साथ चलो।' पत्थर को उठाकर वह युवक संत के साथ-साथ चलने लगा।

कुछ समय तक तो आराम से चला..लेकिन थोड़ी देर में ही उसके हाथ में दर्द होने लगा.. पर दर्द सहन करता चुपचाप चलता रहा। संत पहले की तरह मधुर उपदेश देते चल रहे थे.. पर अब युवक का धैर्य जवाब दे गया। उस युवक ने कहा: 'गुरूजी, आपके प्रवचन मुझे प्रिय नहीं लग रहे अब.. मेरा हाथ दर्द से फटा जा रहा है।' पत्थर रखने का संकेत मिला तो उस युवक ने पत्थर को फेंका..और आनंद से भरकर गहरी साँसे लेने लगा।

संत ने कहा: 'यही है खुश रहने का राज़.. मेरे प्रवचन तुम्हें तभी आनंदित करते रहे जब तुम बोझ से मुक्त थे, परंतु पत्थर के बोझ ने उस आनंद को तुमसे छीन लिया। जैसे पत्थर को ज़्यादा देर उठाये रखेंगे तो दर्द बढ़ता जायेगा.. उसी तरह हम दु:खों या किसी की कही कड़वी बात के बोझ को जितनी देर तक उठाये रखेंगे उतना ही दु:ख होगा। अगर खुश रहना चाहते हो तो दु:ख रूपी पत्थर को जल्दी से जल्दी नीचे रखना सीख लो और हो सके तो उसे उठाओ ही नहीं।'

'सब्र का फल'

एक गरीब युवक अपनी गरीबी से परेशान होकर अपना जीवन समाप्त करने नदी पर गया, वहां एक साधू ने उसे ऐसा करने से रोक दिया। साधू ने युवक की परेशानी को सुन कर कहा कि मेरे पास एक विद्या है, जिससे ऐसा एक जादुई घड़ा बन जायेगा कि जो भी तुम इस घड़े से मांगोगे या इच्छा रखोगे, ये जादुई घड़ा उसे पूरी कर देगा, पर जिस दिन ये घड़ा फूट गया, उसी समय जो कुछ भी इस घड़े ने दिया है, वह सब गायब हो जायेगा। अगर तुम मेरी 2 साल तक सेवा करो, तो ये घड़ा मैं तुम्हें दे सकता हूँ, और अगर 5 साल तक तुम मेरी सेवा करो, तो मैं ये घड़ा बनाने की विद्या तुम्हें सिखा दूंगा।

बोलो तुम क्या चाहते हो?

युवक ने कहा, महाराज मैं तो 2 साल ही आपकी सेवा करना चाहूंगा, मुझे तो जल्द से जल्द, बस ये घड़ा ही चाहिए। मैं इसे बहुत संभाल कर रखूंगा, कभी फूटने ही नहीं दूंगा। इस तरह 2 साल सेवा करने के बाद युवक ने वो जादुई घड़ा प्राप्त कर लिया और अपने घर पहुँच गया। उसने घड़े से अपनी हर इच्छा पूरी करवानी शुरू कर दी। महल बनवाया, नौकर चाकर मांगे, सभी को अपनी शान-शौकत दिखाने लगा, सभी को बुला-बुला कर दावतें देने लगा और बहुत ही विलासिता का जीवन जीने लगा। उसने शराब भी पीनी शुरू कर दी और एक दिन नशे में, घड़ा सर पर रख नाचने लगा और ठोकर लगने से घड़ा गिर गया और फूट गया। घड़ा फूटते ही सबकुछ गायब हो गया। अब युवक सोचने लगा कि काश मैंने जल्दबाज़ी न की होती और घड़ा बनाने की विद्या सीख ली होती, तो आज मैं फिर से कंगाल न होता।

ईश्वर हमें हमेशा 2 रास्ते पर रखता है, एक आसान, जल्दी वाला और दूसरा थोड़े लम्बे समय वाला, पर गहरे ज्ञान वाला। ये हमें चुनना होता है कि हम किस रास्ते पर चलें। कोई भी काम जल्दी में करना अच्छा नहीं होता, बल्कि उसके विषय में गहरा ज्ञान आपको अनुभवी बनाता है..।

कहाँ है भगवान?

एक आदमी हमेशा की तरह नाई की दुकान पर बाल कटवाने गया। बाल कटाते वक़्त अक्सर देश-दुनिया की बातें हुआ करती थीं। आज भी वे सिनेमा, राजनीति और खेल जगत आदि के बारे में बात कर रहे थे कि अचानक भगवान् के अस्तित्व को लेकर बात होने लगी।

नाई ने कहा, 'देखिये भैया, आपकी तरह मैं भगवान् के अस्तित्व में यकीन नहीं रखता।'

'तुम ऐसा क्यों कहते हो?' -आदमी ने पूछा।

'ये समझना बहुत आसान है, बस गली में जाइए और आप समझ जायेंगे कि भगवान् नहीं है। आप ही बताइए कि अगर भगवान् होते तो क्या इतने लोग बीमार होते? इतने बच्चे अनाथ होते? अगर भगवान् होते तो किसी को कोई दर्द कोई तकलीफ नहीं होती, नाई ने बोलना जारी रखा। मैं ऐसे भगवान के बारे में नहीं सोच सकता जो इन सब चीज़ों को होने दे। आप ही बताइए कहाँ है भगवान?'

आदमी एक क्षण के लिए रुका, कुछ सोचा, पर बहस ना बढ़े, इसलिए चुप ही रहा।

नाई ने अपना काम ख़त्म किया और आदमी कुछ सोचते हुए दुकान से बाहर निकला और कुछ दूर जाकर खड़ा हो गया। कुछ देर इंतज़ार करने के बाद उसे एक लम्बी दाढ़ी-मूछ वाला अधेड़ व्यक्ति उस तरफ आता दिखाई पड़ा, उसे देखकर लगता था मानो वो कितने दिनों से नहाया-धोया ना हो। आदमी तुरंत नाई कि दुकान में वापस घुस गया और बोला, 'जानते हो इस दुनिया में नाई नहीं होते!'

'भला कैसे नहीं होते हैं! नाई ने सवाल किया, मैं साक्षात तुम्हारे सामने हूँ!'

आदमी ने कहा, 'वो नहीं होते हैं, वरना किसी की भी लम्बी दाढ़ी-मूछ नहीं होती, पर वो देखो सामने, उस आदमी की कितनी लम्बी दाढ़ी-मूछ है !

'अरे नहीं भाई साहब, नाई होते हैं, लेकिन बहुत से लोग हमारे पास नहीं आते।' -नाई बोला।

'बिल्कुल सही। आदमी ने नाई को रोकते हुए कहा, यही तो बात है, भगवान भी हैं पर लोग उनको जानने का प्रयास ही नहीं करते हैं, और न ही उनके सानिध्य में आने की सोचते हैं। बस इधर-उधर भटकते रहते हैं, इसीलिए दुनिया में इतना दु:ख-दर्द है। जिस प्रकार दाढ़ी-मूछ और बाल कटवाने नाई के पास जाना ही होगा, उसी तरह अपने दु:खों से मुक्त होने के लिए हमें भी ईश्वर के सानिध्य में जाना होगा ना।

फरीदाबाद से.35। करतार सिंह भंदना,पूर्व कोऑपरेटिव मिनिस्टर,हरियाणा से ज्ञानचर्चा के पश्चात् उनके साथ चित्र में ब्र.कु. सपना, ब्र.कु. शिल्पी तथा अन्य।

मुंगरा बादशाहपुर-उ.प्र.। पूर्व सांस्कृतिक राज्यमंत्री सुभाष पाण्डेय को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता। साथ हैं ब्र.कु. दीपा।

हाथरस-उ.प्र.। अनूप यादव,निदेशक,दिव्यांग सशक्तिकरण को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु.शान्ता तथा अन्य।

मोतिहारी-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय द्वारा बाढ़ पीड़ितों को राहत सामग्री तथा आवश्यक सुविधा प्रदान करते हुए संस्थान के सदस्य।

बीरगंज-नेपाल। जन्माष्टमी कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् चित्र में प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता मधु राणा एवं उषा शाह, बीरगंज नर्सिंग कैम्पस की चीफ मुना राणा तथा ब्र.कु. बहनें।

बाँदा-उ.प्र.। जिला कारागार में कारागार अधीक्षक को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् प्रसाद देते हुए ब्र.कु. गीता। साथ हैं ब्र.कु. शालिनी।

कोलम्बिया-बोगोटा। 'एन्थुसिएस्म फॉर एवर' विषय पर त्रि-दिवसीय रिट्रीट के पश्चात् समूह चित्र में वहाँ के भाई बहनों के साथ ब्र.कु.भारत भूषण।

चुनार-उ.प्र.। रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में थाना प्रभारी एस.ओ. विजय कुमार सिंह, एस.आई. नरेन्द्र सिंह, एस.आई. प्रवीण कुमार राय, ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य।